॥ ध्यान पदमाला ॥

जिसको

पंडित सत्यनारायण कवीश्वर धर्माधिकारी
रियासत रामपुर रुहेलखण्ड साकिन
कुरावली जिला मैनपुरी ने
सकल रामोपासकन के ध्यानाऽऽनन्द प्राप्त्यर्थ सरल
भाषा में निर्मित किया।

पण्डित बलभद्रनाथ शुक्ल के द्वारा

डाक्टर भैरोंप्रसाद पाठक प्रोप्राइटर के
मेडिकल यन्त्रालय कानपुर में छपी

प्रथमवार १००० प्रति] सम्वत् १९५३ [मूल्य

विज्ञापन

सर्व सज्जन महाशयों को विदित हो कि कवीश्वर सत्य-नारायण रचित बहुतसी पुस्तकैं छपने को प्रस्तुत हैं। जिन महाशयों की अभिलाषा उनको अवलोकन करने की हो वह महाशय निम्न लिखित स्थान पर अपना नाम धाम लिखकर भेजदेवैं. छपने पर कुल पुस्तकैं उनकी सेवा में भेजदी जावैंगी

आपका

बलभद्रनाथ शुक्ल

हरबँसमोहाल नहर के किनारे—कानपुर

॥ श्रीगणेशायनमः ॥

अथ भाषा ध्यान पदमाला लिख्यते

श्री गणपति के चरण कमल में निज शिरनाऊँ।
नमों शारदा पाद पदम सुन्दर मति पाऊँ॥
सुमिरौं श्री गुरुदेव प्रगट हरि रूप ज्ञान घन।
करि २ शुभ उपदेश शुद्ध कीने जिन जन मन॥१॥
सुमिरौं अब श्रीराम मन्त्र जिनको जग तारक।
बरनौं तिनको ध्यान यथा मति मङ्गल कारक॥
हुइ निश्चिंत तनु शुद्ध समा सन रहसि बिछावै।
बनै तबै करि नेम रूप रघुवर को ध्यावै॥२॥
जोग रीति तें चित्त शुद्ध चष मूंदि बैठि हिय।
लखै कमलदल अष्ट खिलो तहँ राजत सियपिय॥

सुन्दर नख मनि नखत चंद रवि तें छवि अधिका ।
ऊँचे सित कुछ लाल मोह तम अघ खग बधिका ३
अति मृदु सुन्दर स्याम अँगुरीं प्रभु की कैसीं ।
भव रुज हरद समूल कलप तरु की जर जैसीं ॥
एक एक यह कहति मनौ हम दसहू ऐसीं ।
प्रति दिशि तम गज कुंभ दमनि रवि हरि कर जैसीं ४
इत उत चँहु युग मनौ चारि धर्मादिक दायिनि ।
कामादिक मल ताप तीनि की सपदि नसायिनि ॥
हैं उपदेशिक भजौ सदा दसहू तजि हमकों ।
तौ उत्तम गति देंहिं भेदिकैं दसयौं तुमकों ॥५॥
अति सुन्दर पद कमठ पीठि वर फलक सोह जनु ।
नीलकमल के मुकुल सुभग दर दलित दिपत मनु ॥
एड़ी शुभ नारङ्ग गुल्फ मृदु अरुन पाद तल ।
जिनके सुमिरत लहत त्रिवेनी मज्जन को फल ॥६॥

अति निर्मल जो बिशद नखाऽली सुरसरि सोई ।
सुमिरतहीं सब पाप नरन के डारति धोई ॥
मेचकता पद पीठि मनोहर जमुना दरसै ।
करनि राग अनुराग चरन तल सोई सरसै ॥७॥
चरन चिन्ह चौबीस चारु चित चिंतत जोई ।
कुलिसादिक कलि कलुष नसावन कामद सोई ॥
पुरट पाँउटे सुघर कहत सिंजित मिसि मानौ ।
सुनु जन गुन गन चरन सरन तन मन धनि जानौ ८
सुघर जङ्घ शुभ जानु भूरि छवि ऊरू भ्राजत ।
इत उत के दुइ जैत खम्भ मनु अनुपम राजत ॥
किधौं देव तरु केर मूल दुइ सोभित रूरे ।
किधौं कलभ कर जुगल बिराजत सुखमा पूरे ॥९॥
चौंडी कटि पर पीत पोतिया धोती चमकै ।
तप्त कनक की प्रभा न ऐसी बिजुरी दमकै ॥

कनक तार नग जटित घूंघुरू बजत कौंधनी ।
जन मन के अभिलाख अमित प्रद चित्त सोधनी १०
त्रिवली जुत शुभ उदर नागवल्ली दल भासैं ।
जनु त्रिवर्ग सोपान मुक्ति घर केर विकासैं ॥
दहिनावर्त्ति गँभीर नाभि संजुत पुनि कैसो ।
नभ चित्त सागर बीचि भमर संयुत है जैसो ॥११॥
सुन्दर गोल मझोल उठो सो अति मृदु सोहै ।
सकल सृष्टि आधार ब्रह्म निशि लय को जो है ॥
रोमाऽवली उदार उदर उर चिन्ह विराजै ।
मनौ रूप सर सरस नेह तृण अंकुर छाजै ॥१२॥
परम मनोहर ऊँचो चौड़ो दीरघ उर है ।
स्याम शिला सम लखैं खलन को आवत जुर है ॥
जहां बसैं नित रमा कञ्ज रतनाऽकर त्यागी ।
राजत जँह श्री वत्स जाहि सुमिरत बड़ भागी १३

वज्र मणिन के हार वैजयन्ती बनमाला ।
परम भागवत भूरि भर्ग अलि जुत सब काला ॥
लाँबीं पीवर स्याम जानु तक भुजाँ लसीं हैं ।
रमा सिया सी भूरि जिन्हैं गल धारि फसीं हैं १४
भक्तन के चित खेद खैंचनी जिन विन को हैं ।
द्रुपद सुता गजफन्द काटनी मुनि मन मोहैं ॥
महा मणिनु के जाल जटित अङ्गद कङ्कन हैं ।
ब्रह्माऽदिक जन चहैं छाँह जिनकी छन २ हैं॥१५॥
नख करसाख समेत लगैं जन मन को कैसीं ।
पाँच सिरन की मुकुट धरैं नागिनि दुइ जैसीं ॥
कनक मुद्रिका लसैं नाम चिन्तामनि जूटी ।
भव दुख दारिद लेति नरन के सुमिरत लूटी १६
बृषभ कँध कँधरा चारु तर कम्बु कण्ठ भल ।
तरुण तरुणि की प्रभा हरण मणि राजत जिहि थल॥

मुख मण्डल छवि खानि एक तें एक अङ्ग वर ।
अति निर्मल राकेश परम सुखमा सुखमा कर १७
कुञ्चित कच मृदु मिही स्याम घन सुरभी पूरे ।
बिच्च बिच्च पीत प्रसून मनौ बहु अलि अति रूरे ॥
उन्नत चारु ललाट भूरि रेखा परमाऽयत ।
तिलक सहित लखि लहत मनुज मङ्गल हरि सायत
भौंह कमान समान पनच्च इव बरुनी सोहैं ।
पालन कृपा प्रसाद कोप शर चितवनि जो हैं ॥
अर्थ धर्म्म सब काम मोक्ष प्रद चख के कोए ।
कीने अमित सनाथ जथा विधि जब जे जोए १९
अति अद्भुत प्रभु नयन अरुण सित स्याम रङ्ग हैं ।
मनहु सुरा पीयूष हलाहल बसत सङ्ग हैं ॥
चितवत एकैवार सबै जग जीव जहाँ लौं ।
कोइ झूमै कोइ जियैं मरैं कोइ कहौं कहाँ लौं २०

दीरघ गोल सुतार उच्चौं हैं चञ्चल कैसे ।
कमल मुकुल दल पक्यौ हरन चख खञ्जन जैसे ॥
श्रवन सीप सम कनक खचित कुण्डल मकराऽकृति ।
महाँ गूढ़ हनु चारु नासिका शुक बदनाऽकृति २१
सारुण गोल कपोल रदच्छद अलक झलक युत ।
पक्व बिम्ब फल लखैं मुकर पर बैठि भुजग सुत ॥
मन मोहत भव ताप नसावत सब दुख भाजत ।
लखै मन्द मुसुकानि कुन्द दाड़िम रद राजत २२
चारु चिबुक दुति सिंधु सीम जनु बनै लखैं छवि ।
बरनै कैसे सुधा स्वादु जब नहीं चखैं कवि ॥
वय किशोर बहु रतन जटित वर है किरीट शिर ।
अति दमकत ओढ़ैं दुकूल जनु दामिनि है थिर २३
सारँग धनु हैं बाम पानि काँधे तूनीरा ।
दहिने कर शर है अमोघ नाशक जन पीरा ॥

शङ्ख चक्र पाथोज गदा चारौ तनु धारी ।
प्रति छन ते प्रत्यक्ष रहत हैं जन भय हारी २४
आदि शक्ति छवि खानि वाम तट है आसीना ।
जगदम्बा जानकी जानि कवि छवि बरनी ना ॥
सो जिमि छाया महाराज की इच्छा जानौ ।
ता बिनु लहैं न काम द्वैत अद्वैत प्रमानौ ॥२५॥
इत उत शिव अज इन्द्र आदि भरताऽदिक भाई ।
पाइ रजाइसु करैं काम रुख लखि चितलाई ॥
पवन पुत्र पद पदम परिचरैं पल पल रुचि सों ।
कोटि मदन छवि रूप कोटि रवि लाजत रुचिसौं २६
भलैं निरखि प्रभु रूप गहौ पद अति अनुरागे ।
कहु निज चित की बात कपट का प्रभु के आगे ॥
पुरवैं हरि जन काम अवसि जानै संसारा ।
भक्त वश्य भगवान नाम सरनाम उदारा ॥२७॥

जिनकी कृपा कटाक्ष कोर लहि सत्यनरायन ।
द्विज सनाढ्य कुल भयो चँहँत हरिदास परायन ॥
सम्वत गुण श्रुति अङ्क चन्द्र विक्रम को जानौ ।
माघ प्रथम दिन सोम तवै हरि ध्यान बखानौ २८

इति श्री मद्ऽधमोद्धारण नारायण चरण
कमल मधु मधुप दासाऽनुदासता भिलाष
युत सनाढ्य बंश्य सत्सत्यनारायण
बिरचिता ध्यान पदमाला समाप्ता

सम्वत् १९५० चैत सुदी ९ रविवार शुभम्